SANT SHRI MALOOKDAS

Sant Shri Malookdas occupies a distinguished place in India's sant-tradition, embodying bhakti, selfless service, equality of vision and welfare of all. He lived during the reigns of Mughal emperors Akbar, Jahangir, Shah Jahan and Aurangzeb, an age marked by social divisions, religious sectarianism and rigid customs. Through his teachings, he advocated compassion, righteousness, universal welfare and devotion to the Divine, reflecting the eternal values of Sanatan Dharma.

He was born in 1574 CE at Kara (Kada), in present-day Kaushambi district of Uttar Pradesh, traditionally identified as the son of Sundardas Khatri. From an early age, he displayed a strong inclination towards spirituality and detachment from worldly pursuits. Associated with the Bhakti movement, his teachings presented profound philosophical ideas in simple language accessible to ordinary people. His writings emphasised inner devotion over outward religious formalities, while exploring knowledge, renunciation, self-realisation, the nature of the Divine and liberation.

His teachings presented profound Vedantic principles in simple language accessible to the common people. His celebrated doha, "Ajagar karai na chakari, panchhi karai na kam, Das Maluka yon kahain, sabke data Ram," expresses unwavering faith in Shri Ram as the Divine sustainer, while "Maluka soi pir hai, jo janai par pir" places empathy for another's suffering at the heart of true saintliness. Thousands became his disciples, including Ramdas Ji, Dayaldas Ji, Sudamadas Ji, Udayramdas Ji, Keshavdas Ji, Mirmadhavdas Ji and Garibdas Ji.

He made a significant contribution to Hindi saint literature. Works traditionally attributed to him include Gyan Bodh, Ratan Khan, Bhakti-Vivek, Gyan Parochhi, Barahkhadi, Ramavatar Lila, Vraj Lila, Dhruv Charit, Vibhav Vibhuti and Sukh Sagar. His literary and spiritual legacy continues through the works of later scholars and followers.

He passed away in 1682 CE. His tradition continues to be represented by institutions such as Shri Malook Peeth at Vanshivat, Vrindavan, which preserves his legacy through devotional and community activities.

The Department of Posts is pleased to issue a commemorative postage stamp on Sant Shri Malookdas, to mark his enduring spiritual, literary and social legacy and his timeless message of devotion, compassion, selfless service and welfare of humanity.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Himani
Text	:	Based on the content provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

सन्त श्रीमलूकदास
Sant Shri Malookdas

विवरणिका
BROCHURE

सन्त श्रीमलूकदास

भक्ति, निस्वार्थ सेवा, समदृष्टि और सर्व कल्याण के पुण्य–प्रतीक सन्त श्रीमलूकदास भारत की सन्त–परंपरा में विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनका जीवनकाल मुगल सम्राट अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल तक रहा। यह युग सामाजिक विभाजन, सांप्रदायिक विद्वेष और रूढ़िवाद से ग्रसित युग था। इस कठिन कालखंड में सन्त श्रीमलूकदास ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से करुणा, सदाचार, सर्व कल्याण और ईश्वर के प्रति समर्पण का विचार पल्लवित किया। उनके उपदेश सनातन धर्म के शाश्वत मूल्यों का प्रतिबिंब थे।

सन्त श्रीमलूकदास का जन्म 1574 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के वर्तमान कौशांबी जिले के कड़ा में हुआ। उनके पिता का नाम सुंदरदास खत्री माना जाता है। उनमें अल्पआयु से ही, आध्यात्मिकता के प्रति गहरा झुकाव और सांसारिकता से अलगाव परिलक्षित हुआ। उन्होंने अपनी शिक्षाओं में सरल भाषा का उपयोग कर गहन दार्शनिक विचारों को आम लोगों के लिए सुलभ बनाया। उनकी रचनाएं और शिक्षाएं भारत में भक्ति आंदोलन का अभिन्न अंग मानी जाती हैं। इनमें ज्ञान, त्याग, आत्म–साक्षात्कार, ईश्वर और मुक्ति के मार्ग का अन्वेषण करते हुए बाह्य धार्मिक औपचारिकताओं की तुलना में आंतरिक श्रद्धा पर बल दिया गया है।

उन्होंने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से गूढ़ वेदांतिक सिद्धांतों को आम लोगों के लिए सुगम और सरल भाषा में प्रस्तुत किया। उनका प्रसिद्ध दोहा, "अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम, दास मलूका यों कहैं, सबके दाता राम," श्री राम में दिव्य रक्षक के रूप में उनके अटूट विश्वास की अनन्य अभिव्यक्ति है, जबकि "मलूका सोइ पीर है, जो जाने पर पीर" में वे पर–दुख के प्रति सहानुभूति को सच्चे सन्त की सच्ची निशानी बताते हैं। उनके सहस्त्रों शिष्यों में रामदास जी, दयालदास जी, सुदामादास जी, उदयरामदास जी, केशवदास जी, मीरमाधवदास जी और गरीबदास जी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

सन्त मलूकदास ने हिंदी सन्त साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी प्रमुख रचनाएं ज्ञान बोध, रतन खान, भक्ति–विवेक, ज्ञान परोछि, बारहखड़ी, रामावतार लीला, व्रज लीला, ध्रुव चरित, विभव विभूति और सुख सागर मानी जाती हैं। उनकी साहित्यिक और आध्यात्मिक विरासत आज भी तमाम विद्वानों और अनुयायियों के माध्यम से निरंतर चौतन्य है।

सन्त श्रीमलूकदास का देहावसान सन् 1682 ईस्वी में हुआ। वंशीवट, वृंदावन स्थित श्री मलूक पीठ जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने उनकी परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए, भक्ति और सामुदायिक सेवा के माध्यम से उनकी गौरवपूर्ण विरासत को आज भी संरक्षित रखा है।

डाक विभाग सन्त श्रीमलूकदास के सम्मान में एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट उनकी आध्यात्मिक, साहित्यिक और सामाजिक विरासत के साथ–साथ भक्ति, करुणा, निस्वार्थ सेवा तथा मानव कल्याण के उनके सनातन संदेश के प्रति असीम श्रद्धा की अभिव्यक्ति है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/

विरूपण कैशे	:	सुश्री हिमानी
पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	307100
Stamps Printed	:	307100
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00